

सतत विकास लक्ष्य –5 एवम् महिलाएँ: सामाजिक, आर्थिक एवम पर्यावरणीय परिवर्तन में महिला सशक्तीकरण का विकास

अन्नुप्रिया [1*] , डॉ सपना गहलोत [2]

[1] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

[2] शोध निर्देशिका, राजनीति विज्ञान विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

Corresponding Author: * डॉ सपना गहलोत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.23941320

सारांश

विकास आज के दौर में सतत विकास की अवधारणा बहुआयामी है। सतत के उद्देश्य पर्यावरणीय संतुलन सामाजिक एवम् आर्थिक प्रगति है। प्रारम्भ में विकास की बातें की जाती थी परन्तु अब विकास के सतत शब्द जोड़ दिया गया जिसका तात्पर्य यह है कि ऐसा विकास जो सतत रूप से बना रहे। महिलाओं की आबादी कुल जनसंख्या की आधी है। किन्तु महिलाएं आज भी अपने पूर्ण विकास से वचित है। महिला सशक्तीकरण आज के दौर की मांग है क्योंकि बिना महिलाओं के विकास के किसी भी देश की उन्नति सम्भव नहीं है। महिलाओं द्वारा समाज में अनेक प्रकार से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाती हैं जैसे रोजगार, घरेलु अर्थव्यवस्था, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, कृषि, पशुपालन आदि । परन्तु इन क्षेत्र में इनका योगदान होने के बावजूद भी वे शिक्षा, तकनीकी संसाधनों , सेवा क्षेत्र निर्णय निर्माण क्षेत्र में पिछड़ी हुई है। सतत विकास लक्ष्य – 5 में लैंगिक समानता के लिए लक्ष्य निर्धारित किया गया है। महिलाओं की हिंसा सुरक्षा, भेदभाव को समाप्त करना, निर्णय - निर्माण में भागीदारी अवैतनिक घरेलू एवम् देखभाल, आर्थिक संसाधनों तक पहुंच आदि लक्ष्य 5 में निर्धारण किए गये है। संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों द्वारा लक्ष्य 5 को अपनाया गया, जिनमे भारत भी शामिल है। लैंगिक समानता मानवाधिकार की श्रेणी में भी आता है। शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य सतत विकास 5 एवम् महिला सशक्तीकरण की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय संतुलन के आधार पर विकास की वास्तविकता की पहचान ज्ञात करना है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 3139-9851
- **Received:** 21-08-2026
- **Accepted:** 20-09-2026
- **Published:** 30-10-2026
- **IJCATM:**1(3); 2026: 286-289
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes
- **Paper type:** Review Paper

How to Cite

अन्नुप्रिया, गहलोत एस. सतत विकास लक्ष्य–5 एवम् महिलाएँ: सामाजिक, आर्थिक एवम् पर्यावरणीय परिवर्तन में महिला सशक्तीकरण का विकास।. Int. J. Current Acad. Trend. Multi. 2026;1(3):286-289

Access this Article Online

www.ijcatmjournal.com

मुख्य शब्द: सतत विकास, महिला सशक्तीकरण, महिला शिक्षा, आर्थिक विकास, लैंगिक समानता ।

© 2026 अन्नुप्रिया, डॉ सपना गहलोत this is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

मानव के विकास ने समय एवम् परिस्थितियों को बदल दिया। समय के साथ हुए मानव सभ्यता के विकास ने अर्थव्यवस्था को उन्नति प्रदान की परन्तु पर्यावरण पर इसका प्रभाव नकारात्मक रूप से पड़ा । वन एवं जंगलों का अंधाधुन प्रयोग हुआ, जिससे औद्योगीकरण एवम् आधुनिकीकरण मे सहायता मिली, परन्तु पर्यावरण का ह्रास हो गया। पर्यावरण संतुलन की सुरक्षा के लिए सतत विकास की अवधारणा का जन्म हुआ। स्टॉक हॉम सम्मेलन, 1972 में सबसे पहले "सतत विकास" शब्द का प्रयोग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किया गया था। सतत विकास का अर्थ है, संसाधनों का प्रयोग इस प्रकार से किया जाए, जिसमे वर्तमान पीढ़ी भी उपभोग कर सके और भविष्य की पीढ़ी भी इसका उपयोग कर सके। पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं का योगदान सर्वोपरि रहा है। कृषि कार्य, पशुपालन, जंगल से लकड़ी लाना आदि कार्य महिलाएं उत्तम प्रकार से कर पाती है। देश की कुल आबादी की आधी जनसंख्या महिलाओं की है, इसलिए जिस देश की नारी जितनी अधिक आर्थिक सम्पन्न होगी, वह देश उतना ही समृद्ध होगा। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, तकनीकी ज्ञान, सेवा क्षेत्र एवम् नीति- निर्माण में जितना अधिक विकास महिलाओ का होगा उतना अधिक महिला सशक्तीकरण होगा। सतत विकास लक्ष्य 5 का लक्ष्य कि महिलाओं को 2030 तक लैंगिक समानता प्राप्त हो । स्त्रियों एवम् बालिकाओं के साथ होते भेदभाव को समाप्त कर समानता स्थापित करना, अवैतनिक घरेलु कार्य को मान्यता देना, कुप्रथाओं, जैसे बाल-विवाह, हिंसा समाप्त करना SDG-5 के लक्ष्य है।

शोध के उद्देश्य

शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है:

(1) सतत विकास लक्ष्य 5 एवम् महिला सशक्तिकरण की अवधारणा को समझना ।

(2) महिलाओ के राजनीतिक, पर्यावरण, सामाजिक एवम् आर्थिक विकास का अध्ययन करना ।

(3) भारत मे महिला सशक्तीकरण का अध्ययन करना।

(4) सतत विकास एवम् महिला शिक्षा व रोजगार सम्बन्धित विकास का अध्ययन करना।

प्रस्तावित शोध पद्धति

शोध पद्धति में हम विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया करेंगे। प्राथमिक एवम् द्वितीयक स्त्रोतों का प्रयोग शोध अध्ययन के लिए किया जाएगा। प्राथमिक स्त्रोत में उच्च, मध्यम एवम् निम्न स्तर की महिलाओं का प्रत्यक्ष व टेलिफोनिक साक्षात्कार करेंगे, जिससे सभी स्तरों के आधार पर महिला सशक्तिकरण जाँच की जा सके। द्वितीयक स्त्रोत में संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट, नीति आयोग की रिपोर्ट, सरकारी रिपोर्ट, सतत विकास सम्बंधित रिपोर्ट, प्रकाशित पुस्तकें, जर्नल तथा उपलब्ध स्त्रोत का प्रयोग किया जाएगा। किन्तु कुछ बाधाओं जैसे आंकड़े छुपाना, सूचनाएं उपलब्ध न होना, को भी अध्ययन के दौरान ध्यान रखा जाएगा। सतत विकास लक्ष्य के आधार पर महिला सशक्तीकरण एवम् लैंगिक समानता के विकास का अध्ययन किया जाएगा। आर्थिक सामाजिक और पर्यावरण संतुलन में महिलाओं का योगदान एवम् विकास सम्बंधित बिन्दुओं को ध्यान में रख कर अध्ययन किया जाएगा।

सतत विकास और चार स्तंभ: सतत विकास का अर्थ है संसाधनों का इस प्रकार प्रयोग किया जाएं जिससे वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति हो साथ ही भविष्य की पीढ़िया भी उनका उपयोग कर सके। सतत विकास की अवधारणा केवल पर्यावरण से सम्बंधित नहीं है बल्कि आर्थिक और सामाजिक आयामों को भी इसमें शामिल किया गया है।

सतत विकास के चार स्तंभ है जिनका वर्णन निम्नलिखित है :

(i) पर्यावरणीय स्तम्भ: पर्यावरणीय सतत विकास का अर्थ है, मानव विकास में पर्यावरण का प्रयोग इस प्रकार से किया जाए, जिससे प्रकृति का अत्याधिक दोहन व दहन न हो और मानव अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करके विकास कर सके। जंगलों का अत्यधिक काटना, इसका सबसे बड़ा कुप्रभाव है जलवायु परिवर्तन। वन संरक्षण, भूमि संरक्षण, जल संग्रहण, जैव विविधता का संरक्षण, जलवायु परिवर्तन इन सभी आयामों को पर्यावरण सतत विकास के अंतर्गत शामिल किया गया है।

(ii) आर्थिक स्तम्भ: आर्थिक सतत विकास का तात्पर्य समाज के प्रत्येक वर्ग को रोजगार, आय, उत्पादन के संसाधन, संसाधनों का वितरण, अवसरों की समानता न्यायपूर्ण रूप से प्राप्त हो। यदि आर्थिक विकास का लाभ सीमित लोगों । छोटे से वर्ग तक सीमित रहेगा, ऐसे में सतत विकास सम्भव नहीं है।

(iii) सामाजिक स्तम्भ: सामाजिक सतत विकास का तात्पर्य है समाज के प्रत्येक वर्ग का विकास विशेषकर कमजोर वर्ग और महिलाओं का विकास। स्वास्थ्य, शिक्षा, मानवाधिकार, सामाजिक न्याय और समानता को सामाजिक सतत विकास के आयाम में शामिल किया गया है।

(iv) सांस्कृतिक स्तम्भ: सांस्कृतिक सतत विकास स्तम्भ को सतत विकास स्तंभों में 2010 में शामिल किया गया था। [1] सांस्कृतिक सतत विकास का तात्पर्य है विरासत, मूल्यो, ज्ञान, संस्कृति, विविधता संरक्षण जो मानव समाज का निर्माण करते है। साथ ही इसमें ऐतिहासिक इमारतो, कलाओं, भाषाओं के संरक्षण को भी शामिल किया गया है।

सतत विकास लक्ष्य – 5

सतत विकास लक्ष्यों में 17 लक्ष्य का चयन 2015 में संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य देशों द्वारा अपनाए गए थे। लक्ष्यों को प्राप्त करने की समय सीमा 2030 तक निर्धारित की गई है। [2] सतत विकास लक्ष्य 5 में लैंगिक समानता का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसका लक्ष्य है कि 2030 तक पूर्ण रूप से लैंगिक समानता की स्थापना की जाएगी। महिलाओ और बालिकाओं के विरुद्ध भेदभाव समाप्त करना, हिंसा और शोषण समाप्त करना, बिना इच्छा विवाह और जननांग विकृति, अवैतनिक देखभाल एवम् घरेलू जिम्मेदारियों के महत्व को प्रोत्साहित करना, प्रजनन स्वास्थ, नेतृत्व व निर्णय भागीदारी, प्रौद्योगिकी महिला सशक्तिकरण, वित्तीय सेवाओं मे समान अधिकार आदि लैंगिक समानता लक्ष्यों में चयनित किए गए हैं। [3]

© 2026 अन्नुप्रिया डॉ सपना गहलोत this is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सतत विकास और महिला सशक्तीकरण:
सतत विकास में महिलाओं की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है। महिलाओ का विकास किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान रखता है। शहरी महिलाए शिक्षा, रोजगार एवम् कौशल निर्माण, नीति निर्माण भूमिका, व क्षेत्र आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ग्रामीण महिलाएं कृषि, पशुपालन, संसाधनों का दोहन, खाद्य प्रसंस्करण जैसे कार्यों का निर्वाहन करती है। महिलाओं द्वारा किए जाने वाले कार्य से देश एवम समाज का आर्थिक विकास है। परन्तु आज भी आर्थिक क्षेत्र में इनकी भागीदारी बहुत कम है। सतत विकास लक्ष्य [5] जो 2030 में प्राप्त करना है अभी हम उससे कोसो दूर है, कारण असामनता अशिक्षा, बेरोजगारी, लैंगिक भेदभाव, हिंसा व उत्पीडन आदि। महिला सशक्ति करण एवम् सतत विकास के लिए इन बाधाओं एवम भेदभाव को समाप्त करना होगा।

सतत विकास एवम् महिलाओं की आर्थिक भूमिका:
महिलाओं की आर्थिक रूप से स्वतंत्रता उनके आत्मविश्वास समाज में सम्मान और देश व परिवार की आय में वृद्धि करता है। स्वतंत्रता से निर्णय निर्माण भागीदारी में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाती है। महिलाओं का आर्थिक सशक्तीकरण केवल आय प्राप्त करने एवम रोजगार उपलब्ध करने से ही सम्भव नहीं होने वाला उसके लिए पुरुषों के समान पारिश्रमिक देना, पुरुषों के समान कार्य घंटे निर्धारित होना, सुरक्षित कार्यस्थल, संपत्ति पर अधिकार, मातृत्व सुविधाएं आदि, अवसरी की समानता होना अति आवश्यक है। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार नियमित वेतनभोगी कर्मचारियों में महिला और पुरुष वेतन का औसत अनुपात 2018 -2019 में 0.74 से बढ़कर 2022-2023 में 0.76 तक बढ़ गया है जो सकारात्मक है, किन्तु SDG लक्ष्य 5 के निर्धारित लक्ष्य प्राप्ति से अभी बहुत कम है। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार महिलाओं और पुरूषों की श्रम बल में भागीदारी पर अनुपात 2018-19 में 0.33 से बढ़कर 2022-23 में 0.48 हो गया है। श्रम बल आयु 15 से 59 वर्ष तक के आधार पर रिपोर्ट आंकड़े निर्धारित है।

सतत विकास और सामाजिक महिला सशक्तीकरण:
महिला सशक्तीकरण तब तक पूर्ण नही माना जाएगा, जब तक समाज में उनको पुरुषों के समान समानता एवम् अवसर प्राप्त नही हो । महिलाओ के साथ प्रत्येक क्षेत्र पर भेदभाव होता है जैसे कार्यस्थल पर, पारितारिकस्तर पर, सार्वजनिक स्तर आदि। लैंगिक पूर्वाग्रह का प्रभाव शिक्षा, विवाह, रोजगार व अन्य क्षेत्रों पर दिखाई पड़ता है। कानून बनाने और लागू कर देने से ही केवल समानता एवम् सामाजिक महिला सशक्तीकरण सम्भव नहीं है। इसके लिए जागरूकता कार्यक्रमों का प्रसार आवश्यक है, जो कि स्कूल, विश्वविद्यालय, संस्थाओं एवम् विज्ञापनों के माध्यम से चलाए जाने चाहिए। महिलाओं एवम् बालिकाओं को उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवम व्यवसायिक शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार जो कि एनएचएफएस -5 के आधार पर प्रस्तुत की गई है। 15 से 59 वर्ष की महिलाएं मोबाइल फोन पर मालिकाना का प्रतिशत 53.90 % है, जिसमें वह स्वयं मोबाइल फोन का उपयोग करती है, जो कि पुरुषों की तुलना में बहुत कम है। बस आधार पर देखा जाए तोसतत विकास लक्ष्य – 5 के लैंगिक समानता के लक्ष्य से अभी हम बहुत दूर है।

सतत विकास एवम् पर्यावरण संतुलन:
प्रारम्भ से ही महिलाएं, पर्यावरण हितेषी रही है। पेड़ों व जंगलों को काटने से रोकने के लिए अनेक आंदोलन में भी भाग लिया है। प्राकृतिक संसाधनों के साथ महिलाओं का सम्बंध प्रत्यक्ष रूप से रहा है विशेष ग्रामीण एवम् आदिवासी महिलाओं का जल प्रबंधन ईंधन लाना, कृषि कार्य, पशुपालन आदि अनेक ऐसे कार्य है जो पर्यावरण से सम्बंधित है और महिलाए इनके साथ प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी रहती है। इस प्रकार से देखा जाए तो महिलाए पर्यावरण संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और साथ ही यह सुझाव भी दिया जाता है कि पर्यावरणीय नीतियों में महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित करना चाहिए।

भारत में महिला सशक्तीकरण के प्रयास:
महिला सशक्तीकरण के लिए भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय एवम् राज्य स्तर पर अनेक प्रयास किए जा रहे है। सतत विकास लक्ष्य -5 लैंगिक समानता : लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भारत सरकार द्वारा अनेक योजनाओं का संचालन किया जा रहा है जैसे बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना (2015), सुकन्या समृद्धि योजना (2015), प्रधानमंत्री उज्जवला योजना (2016), महिला ई-हाट (महिला उद्यम) (2016), वन स्टॉप सेंटर (2010), मातृत्व लाभ कार्यक्रम (2017) एवम् 106वें संविधान संशोधन के द्वारा महिला आरक्षण विधेयक पारित किया गया। नीति आयोग द्वारा राज्य व केन्द्रीय स्तर पर सतत विकास लक्ष्यों की जाँच की जाती है। सतत विकास लक्ष्य 5 के आधार पर भारत का स्कोर 2018 में 36 था जो अब बढ़कर 2023-24 में 49 हो गया है। इस सकारात्मक परिवर्तन के बावजूद भी 2030 तक 100 % के लक्ष्य को प्राप्त करना असम्भव है। इसके लिए सरकार को बहुत अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

महिला सशक्तिकरण के समक्ष चुनौतियां:-
सतत विकास एवम् महिला सशक्तिकरण के समक्ष चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं–

1. अवैतनिक घरेलु कार्य का भार,
2. आय की असमानता,
3. महिलाओं के साथ हिंसा,
4. स्वास्थ एवम् पोषण संबंधी असमानताएं,
5. आर्थिक असमानता के अवसर,
6. शिक्षा तक असमान पहुँच,
7. सामाजिक / पारिवारिक असमानता,
8. राजनीतिक प्रतिनिधित्व में असमानता,
9. लैंगिक भेदभाव,
10. संपत्ति के अधिकार में असमानत।

इन चुनौतियों का अंत हुए बिना सतत विकास की कामना नहीं की जा सकती।

सुझाव सतत विकास एवम् महिला सशक्तिकरण के लिए निम्नलिखित उपाय आवश्यक है –

© 2026 अन्नुप्रिया डॉ सपना गहलोत this is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. महिलाओं और बालिकाओं को प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक अवसर समान रूप से दिये जाने चाहिए।
2. व्यावसायिक कौशल का प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।
3. विज्ञान एवम् तकनीकी शिक्षा महिलाओं / बधिकाओं को दी जानी चाहिए।
4. रोजगार के समान अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।
5. कानूनी अधिकारी एवम् महिला सम्बंधी योजनाओं का क्रियान्वन पूर्ण प्रभावी रूप से किया जाना चाहिए।
6. परिवार में घरेलू और देखभाल संबंधी जिम्मेदारी का अधिक समान वितरण किया जाना चाहिए।
7. राजनीतिक क्षेत्र में केवल आरक्षित पक्षो तक नियुक्ति पहुँच न रखकर समान अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए।
8. महिलाओं डिजीटल दुनिया से जोड़ना चाहिए जैसे: - मोबाइल उपयोग, डिजिटल साक्षरता, ऑनलाइन सेवाए आदि।
9. सुरक्षित एवम् भेदभाव मुक्त वातावरण उपलब्ध कराना।
10. 10-सामाजिक न्याय प्रदान करना ।

निष्कर्ष

सतत विकास लक्ष्य -5 एवम् महिला सशक्तिकरण एक दूसरे से परस्पर रूप से जुड़े हुए हैं। बिना महिला सशक्तिकरण के हम सतत विकास लक्ष्य 5 की प्राप्ति नहीं कर सकते है। सतत विकास तभी सम्भव है जब महिलाओं का समग्र रूप से विकास होगा जैसे राजनीतिक विकास सामाजिक विकास, आर्थिक विकास एवम् पर्यावरणीय नीतियों में भागीदारी आदि। भारत द्वारा महिलाओं के विकास के लिए समय-समय पर अनेक नीतियाँ, योजनाएं एवम कानून बनाकर समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास करता है। इसके प्रभाव भी कुछ सीमा तक सकारात्मक रूप से प्राप्त हुए है। नीति आयोग के अनुसार लैंगिक समानता से संबंधित सतत विकास लक्ष्य के राष्ट्रीय स्तर के स्कोर में सुधार हुआ है और महिला श्रम-बल भागीदारी तथा महिला-पुरुष आय अनुपात में भी सकारात्मक परिवर्तन दर्ज किए गए । परन्तु इन सकारात्मक परिवर्तन का अनुपात इतना अधिक नही है जिसके आधार पर ये माना जाए कि लैंगिक समानता स्थापित हो गई है। योजनाओं और कानून के क्रियान्वन से सतत विकास लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। सामाजिक मानसिकता एवम् जागरुकता होना अति आवश्यक है। सतत विकास का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति के लिये समान अवसर उपलब्ध कराना है। जब तक समाज की आधी आबादी विकास से वंचित रहेगी तब तक उस समाज के विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इसलिए महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, संपत्ति, तकनीक, राजनीतिक भागीदारी और निर्णय निर्माण में समान अवसर देना केवल महिला कल्याण का विषय नही बल्कि राष्ट्र के समग्र विकास की आवश्यकता है। महिलाओं का विकास सतत विकास के लिए आवश्यक है। भविष्य की विकास नीति का लक्ष्य केवल महिलाओ के लिए विकास नही, बल्कि महिलाओं की समान भागीदारी और नेतृत्व के साथ विकास होना चाहिए।

नोट्स

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

1. सतत विकास के तीन स्तंभ, 6 मई 2025, टैलेंट स्प्रिंट |
2. डिपार्टमन्ट ऑफ इकॉनोमिक एण्ड सोशल एफेयर्स सअसटनेबल डेवलपमेन्ट, संयुक्त राष्ट्र।
3. globalgoals.org.
4. लक्ष्य-5: लैंगिक समानता प्राप्त करना और सभी महिलाओ और लड़कियो को सशक्त बनाना, नीति आयोग भारत सरकार ।
5. लक्ष्य 5: लैंगिक समानता प्राप्त करना और सभी महिलाओं और लड़कियो को सशक्त बनाना, नीति आयोग, भारत सरकार ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नीति आयोग, भारत सरकार। सतत विकास लक्ष्य भारत सूचकांक 2023-24। नई दिल्ली: भारत सरकार।
2. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार। वार्षिक प्रतिवेदन। नई दिल्ली: भारत सरकार।
3. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण। नई दिल्ली: भारत सरकार।
4. संयुक्त राष्ट्र संगठन। सतत विकास के लिए वर्ष 2030 का कार्यसूची। न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र संगठन।
5. संयुक्त राष्ट्र संगठन। सतत विकास लक्ष्य: लैंगिक समानता और महिला सशक्तीकरण। न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र संगठन।
6. विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग। हमारा साझा भविष्य। ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 1987।
7. भारत सरकार। महिला सशक्तीकरण संबंधी राष्ट्रीय नीतिगत दस्तावेज। नई दिल्ली: भारत सरकार।

वेब लिंक्स

1. www.niti.gov.in.
2. talentsprint.com
3. Sdgs.uni.org
4. feminictpolicyindia.org
5. gobalgoall.org

© 2026 अन्नुप्रिया डॉ सपना गहलोत this is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/